

आशा सङ्ग्रहालय

2539

ASHA ARCHIVES

श्रीनृत्यनाथायनमः॥ गाछे साक ॥ त्रिजयवीतियुता
 जंमलकन्यदचुं सकलनिभसारं प्राप्ता संगीतपा
 रं॥ सदसदखिलहेतुं विघ्नपाथोधिसेतुं प्रमथगगा
 सनाथं नोमि नृत्याधिनाथं॥ ॥ सत्यमे॥ मातव॥
 नवमान॥ जे माहेश्वर नचइदि गम्वर पंचवदनमकु
 लानृत्यकलापरकासे॥ त्रिपुरतिकन्दनत्रिभुवन
 वन्दनरंजनतिजजनपूङ्ग आसे जय महेशसुरेश॥
 अङ्गभूषणभुजंगविरूपन विभूतिचरचिः वेशा दुः
 रविमोचनविषमलोचन संयुतशशधरकेशा जय
 महेशसुरेश॥ भुवनलक्ष्मिसुभास्करकहे देवक
 रणाभयअभयवरमोहे॥ ॥ सत्यपवेशमे॥ एम
 ॥ नाट॥ हे॥ भजवगणाधिपतिमुखक आसनेसिं
 हरभूषितकरदुरितनाशने॥ गजमुखमुखकरतिजपी
 वारे सुरगणपूजितपदउपहारे॥ भुवनलक्ष्मी ---
 - रभिते तुमारचरणयुगवसमोरमते॥ ॥ अवम
 तिबिस्तरेगा॥ पुष्पांजलिः॥ समूहान्तकेतकीवकु
 लचम्यकाद्यैर्भशं सुवर्णमणिमोक्तिकेशधिकदी
 प्तिसंपादितः॥ अशेषगुणगुणितः प्रतिदिनं फि र

गोपीचन्द्रराजाको

ज्यश्री पदाकुसुममयानिहितसुषुप्ताञ्जलिः॥
॥ **सूक्त** ॥ अहो प्राणपिय इह जगती भवति म्रि
नाम नोभिलखितकार्यसंपादनं न भवति तदत्राधि
ष्टीयतां ॥ **॥ तन्नीव वीतिप ॥ स्वीकृत ॥** अहो प्रा
णनाथ अमारे प्राणम इह समये समयकोणका
रणे अमारे आकारण करि लो ताहा कहिते आज्ञा हेवे
॥ **सूक्त** ॥ अहो प्राणपिय श्रूयतां ॥ निरवधि वित
न्यमात वितरण जलसीरित्रांगिनः विबुधगणगीयमा
णायशः संतान सतानकुसुमसुरभिरुत दिङ्मण्डल
स्पृष्टचराडभुजदण्डपूर्वोदि प्रोद्यत रूपानसर्चण्ड
-ण्डसहकिरणजाल संतापित प्रत्यर्थ सामन्तम
ण्डलस्य विविधनृपतिशोभे मुकुटमाणिक्यराजित पाद
पद्मस्य सकल - - - चक्राधिभारस्य श्रीश्रीभास्करम
होदेव परमभट्टारकस्य विवाहोत्सवदर्शनार्थं नानादि
गंतवासितः सुरतकिन्नरायदयस्समागम्यन्ति तत्रम
धुरमृदङ्गध्वनिवीणातारसंगीतै गोपीचन्द्रचरित्रना
टकाभिनयनतर्जितव्यमिति तदेहि नानावैसेस्सजी
भवामः ॥ **॥ स्वीकृत ॥** अहो प्राणनाथ सगजधा
नी अमणनाजानिलो विसेषिया वीरिगते आज्ञा हेवे ॥
॥ **सूक्त** ॥ अहो प्राणपिय श्रूयतां ॥ कान्मा

गोपीचंद्र राजा का

कांति पूरि निया निगदितानि त्वा ॥ वोन्नासिता यत्रा
 स्तरति विभ्रमा युवतयः सर्वे गुरो सांयता ॥ मेदिधा खिल
 न त्पगीत विचयेः संशोभिता भूतले य स्पाशेष्य मराव
 ती युति मती हीन प्रभा दृश्यते ॥ ॥ देशवर्णा नाम

----- भास ॥ **चौमात** ॥ सोहीयललितनगरी जि
 हि राजे रसिक सकल जन गुणिर समाजे ॥ युवति वद
 न शशिक जनयने ----- विजित मयने ॥ नि

रवि जाहार शोभा इत पूर हीन वसय नागर नर अति प
 रवीन ॥ भुवन लक्ष्मी मुन भास्कर भू

रुप मरूप ॥ ॥ **सीउक्त** ॥ भहो पाणनाथ देशवर्णा
 ना सुनिलो अतर्प्य राजवर्णा ना कहिते आजो हैवे ॥ ॥
सूचोक्त ॥ ----- श्रयतां ॥ विनिर्जित दु रासद

प्रबल वीर संघः सदा समूल सित सङ्गाः सकल शास्त्र
 तत्त्वार्थ वित् ॥ अयं मद न सुंदरो निहत विषदे न्यः स्वयं
 विभाकर कुलोद्भवो जयति भास्करा भूषिण ॥ ॥ राज

वर्णनामे ॥ ॥ **राग** ॥ **वेला बल** ॥ **प्र** ॥ की रति चंद्र

समाने अहो न प ॥ ध्रु ॥ मदने अपने सुन्दर देवि
 या तेजिलो तन अपमाने सकल जानिलो गुणो रसा
 गर जितिया अरि अभिमाने ॥ मुकुट माणिक संचय

गोपीचन्द्र राजाको

भारिया अगतिनधनदिलोविधि कनकेसाजिकोउच्च
सिंहासनशोभितअपुरवतिविधि॥अहितछादियादेशप
लाइलो असहनपपरतापे सहजेपाइलोइतु पणभ
वसंकितमनभयकाये॥भुवनलक्ष्मीदेवीरतनयभा
स्करभूपवरवाने विवेककरियाबोलेविश्वम्भर सिंह
मनोरथजाने॥ ॥**स्वीउक्त**॥अहोपाणनाथइहवा
रकप्रबंधकथाक्रम कहितेआज्ञाहेवे॥ ॥**स**
क्त॥अहोपाणपियष्टएक॥आदौवक्रनरेदुस्यगो
पीचन्द्रस्यनिर्गमः॥पश्चाद्वक्रकुमारस्यसंगामवि
जयस्ततः॥सयनावतीप्रवेशश्च योगतत्त्वार्थवर्णनं
॥योगीजार्धरस्यापिमारणोविविधाक्रिया॥द्युतकी
डाविनोदश्च पात्रादेशांतरप्रतिः॥विणपरिवाणगां
शिरवाछेदस्ततःपरं॥ततोजार्धरस्यापि गर्त्रमध्येनि
पातनं॥योगीगोरक्षसंवादः आदिताथस्यदर्शनम्॥
जार्धरस्यउद्गारश्रीमछेदुसमागमः॥गोरक्षनाथे
संगपोमीननाथवधस्तथा॥गुरोनिष्कासनंपश्चा
त्त्वर्णावरनिदर्शनं॥नेपालनरपतेश्रीमान्तरदुस्य
कथान्तरं॥अष्टनागस्यसंगेधः गोरक्षोस्थापनंत
था॥मछेदुस्थापनंराज्येपियेजंनाटकःक्रमः॥
वर्जामे॥**एगकोशिक**॥**अस्ता**॥वन्देगणपंभवभ

गोपीचन्द्रराजाको

यहरां सकल सुख सुख सुनिगण शरणं ॥ इच्छत उर्गम
 सागरतरां निज जनमानसनिर्मल करणं ॥ ॥
 स्त्री उक्त ॥ अहो प्राणनाथ तु मां निवेदिन कथा सुनि
 लो अत्र परसभा देखिने चलो ॥ ॥ सूत्रोक्त ॥ अ
 हो प्रिय अवश्य गछामः ॥ ॥ ह्याकमे ॥ राणा ॥ ना
 द ॥ परिमान ॥ गोपीचन्दर कथा करिया प्रकार से च
 रह सुन्दरी तथा पुन निज वासे ॥ नरपति भास्कर कह
 न प्रमाण देखियामो हितसंभेगुणारस जाने ॥ कोरा
 नासाउं ॥ ॥ खव ॥ स्त्री ॥ अहो प्राणनाथ शीघ्र
 जाई चलो ॥ ॥ सू ॥ अहो प्रिय अवश्य ॥ ॥
 इति निष्क्रान्ता प्रभावता ॥ लुः ॥ ॥ ततः प्रविश
 तिरपति गोपीचन्द उदमा पडुमा मंत्री कोटवारस
 हितो ॥ मे ॥ राग ॥ कहवे ॥ चो ॥ सानारो हेरूपा रोप
 रसारे अनङ्ग भुंगिया राजादिरो अंग सारे ॥ वापेरूप
 चन्द हेमये वति माये जा रोको धिजन मिया बोलाइ लो
 राय ॥ आइ रो हे गोविन्द वन्दे वंगे रो अधिपति उदना
 पडुमा लेया केलि करति ॥ ॥ गोपिचन्द ॥ अहो प्रि
 य उदना पडुमा मंत्री कोटवार खनेक स्थाय विश्वा
 म करिबो ॥ ॥ सर्व ॥ अहो वङ्गेश्वर गोपीचन्द जे

गोपीचन्दनराजाको

आज्ञा॥ ॥ गो ॥ अहोपियउदनापडुमा मंत्रीको
 दवारअमारमहिमासुनो॥ ॥ स ॥ अहोमहा
 राजआज्ञाकरो॥ ॥ गो ॥ शो ॥ रक्षारक्षविप
 क्षपक्षकरांश्रीरुक्मसेवापरो भूपाम्भो रुहफल
 नेचदिनकृतश्रीराजवन्देश्वरः॥ यावद्वक्रविभूष
 गोवहुगोगांभीर्यसौर्याकरो गोपीचन्द्रमहीड
 सुन्दरननुवर्चस्त्रिसर्वोपरि॥ एतादृशवंगदेशेरअ
 धिपतिगोपीचन्द्रराजाअमी॥ ॥ स ॥ अहोव
 द्देश्वरसत्य॥ ॥ उ ॥ अहोप्रभुअमारवचनअव
 धानकरो॥ ॥ गो ॥ अहोपियउदनाकहो॥ ॥
 उ ॥ शो ॥ सरस्वदाननागो॥ चारुचंचललोचना॥
 रंगभूमिविसाम्यघउदनाएजवत्सभा॥ ॥ गो ॥
 अहोपियउदनासत्य॥ ॥ प ॥ अहोमहाराजअमा
 रवचनअवधानकरो॥ ॥ अहोपियपडुमाकहो
 ॥ ॥ प ॥ शो ॥ करंगनयनातन्त्रिसुकेशीविभुमाल
 सा॥ विसामीनृत्यसदनं पडुमाभूपतिप्रिया॥ ॥
 गो ॥ अहोपियपडुमासत्य॥ ॥ मंत्री ॥ अहोमहा
 राजअमारविनतिसुनो॥ ॥ गो ॥ अहोमंत्रीकहो
 ॥ ॥ स ॥ नृपतिरसेवकविदितसभदेश॥ मंत्री

गोपीचन्द्र राजाको

सुमतिरंग करि परवेशा॥ ॥ गो॥ अहो मंत्री सत्य
॥ ॥ को॥ अहो महाराज अमार विनति सुनो॥ ॥
गो॥ अहो कोटवार कहो॥ ॥ को॥ विजय कोट वा
र अमिवंगेश्वर दास वसिवो नाचिते अमी करि परका
स॥ ॥ गो॥ अहो कोटवार सत्य॥ ॥ थन देडा
कत कनरा जा सेवा वव मे॥ ॥ राग॥ धनारी॥
चो॥ धान रुतिया रुति वाद लडवारे ककर छोदव वा
पडु हाई॥ सेवक मति सभे भिरि करि वारे सकल क
रि मिते रस मारे॥ ॥ सकल सेन राजा सेवा धाय
वथ वर उद्यम यात वं॥ तिपं॥ ॥ राजा अंत पू
वं॥ भासा॥ ॥ गो॥ अहो प्रिय उदना पडु मा मंत्री
कोटवार अंत पूरा जाय वोचरो॥ ॥ स॥ अहो म
हाराज अवश्य॥ वं मे॥ ॥ राग भुषा॥ चो॥ च
रिगे लोव केश्वर आनन्दरे उदना पडु मा लेया केलिक
न्दरे॥ मन करे गोपीचन्द्र सुमन्दिले मतंग गमन क
रि अति मंथिले॥ कोरा भाषा उं॥ ॥ रव॥ सर्व॥
अहो महाराज शीघ्र गमन करे॥ ॥ गो॥ अहो
उदना पडु मा मंत्री कोत बाल अवश्य॥ ॥ लु
॥ ॥ थन खेनु कलिंगा भागी वो प्रवेश॥ मे॥

गोपीचन्द्रराजाको

॥ ॥ राग ॥ राग विनय ॥ थक नार ॥ भवन सुन्दर
 राजा गोपीचन्द्र नामे तारे परिचारक खेतु पात्र हमे
 ॥ रूप एविसम सरद सरथे पिपक्षदहन कर करे वा
 रा हाथे ॥ विविध अहित गण पिबिन दहने वंधू
 न्द सरसि जभी वरा किराणे ॥ ॥ खे ॥ अहो क
 लिङ्गा कोट द्वार खने कविश्राम करिवो ॥ ॥
 कभा ॥ अहो खेतु पात्र अवश्य ॥ ॥ खे ॥ अहो
 कलिङ्गा भागी घोर अमार वचन सुनो ॥ ॥ कभा
 ॥ अहो खेतु पात्र कहो ॥ ॥ खे ॥ श्लो ॥ गुण न रूपे
 न च संयुतो हं तुल्योपमा यस्य न विद्यते कचित् ॥ वि
 चक्षणा वीरवरो विशेषतः खेतु पसिद्ध सचिवो हमा
 गतः ॥ ॥ कभा ॥ अहो खेतु पात्र सत्य ॥ ॥
 क ॥ अहो खेतु महा पात्र अमार वचन सुनो ॥ ॥
 खे ॥ अहो कलिङ्गा कोट द्वार कहो ॥ ॥ कभा ॥ श्लो ॥
 यस्याक्षयो भूमितरे समस्त प्रकम्यमानो हृदयं रि
 परिणा ॥ ॥ खे ॥ अहो कलिङ्गा सत्य ॥ ॥ भा ॥
 अहो खेतु पात्र अमार वचन सुनो ॥ ॥ खे ॥ अहो भा
 गी घोर कहो ॥ ॥ भा ॥ श्लो ॥ कुविद्या निधान अमी
 भोजने संजुष्ट अमार समानता हि वंग देश उष्ट ॥ वंच

गोपीचन्द्रराजाको

ककुतीरमननाहि चुकरी व्यापालअमी अतिवर्षीर
 ॥ वाधिया मालिया लोक करिया कुकाम सुख भोग
 करि अमि भागी घोर नाम ॥ ॥ खे ॥ अहो भागी
 घोर सत्य ॥ ॥ खे ॥ अहो कलिंगा भागी घोर अत
 र्था राजा गोपीचन्दे दर्शन करिते जायवो चलो ॥
 कभा ॥ अहो महापात्र चलो ॥ वंसे ॥ ॥ राग ॥ व
 लानि ॥ चो ॥ अपुरुवराजा वैसे भवने जायिते वन्द
 न करे राजालो चरणो ॥ आपन सेवक जानिक रपति
 त देखि लो राजालो रूप मन हरिषित ॥ कोरा भासाउं ॥
 ॥ ॥ खे वया ॥ कभा ॥ अहो घेतु पात्र शीघ्र चलो
 ॥ ॥ खे ॥ अहो कलिंगा भागी घोर अवश्य ॥ ॥
 लु ३ ॥ ॥ गोपीचन्द्रराजा ववन्दे थुमे ॥ राग ॥ भूपा
 रि ॥ चो ॥ चरि गेलो ॥ भासाउं ॥ ॥ खे ॥ कलिंगा भा
 गी घोर ववतिय ॥ कोरा भासाउं ॥ ॥ सोहसेने ॥ अ
 हो महा राज गोपीचन्द्र नुमार चरणो पणाम् ॥ ॥ गो
 ॥ अहो महो पात्र खेतु कलिंगा भागी घोर रथा आइ
 सो ॥ ॥ खे ३ ॥ अहो महा राज जे आज्ञा ॥ ॥ गो ॥
 अहो खेतु पात्र कलिंगा भागी घोर देश चर्चा देखिते
 जाव ॥ ॥ खे ३ ॥ अहो महा राज जे आज्ञा अमार

गोपीचन्द्रगजाको

पुणाम॥ ॥ वं मे॥ एग॥ श्री॥ चो॥ ओ॥ भा
 गिघोरदेखो॥ राजवजारगजसेवाविलेवनाकरो
 ॥ घरे॥ चरचिबोहेरो॥ पायिबोआर॥ किछुविचार
 नाकरो॥ ॥ रे॥ अहोकलिंगाभागीघोरगजा
 रआज्ञातेदेशचर्चादेपितेजायिबोचलो॥ ॥ कभा
 ॥ अहोमहापात्रसर्वथा॥ ॥ कभा॥ अहोमा
 हापात्रशीघ्रचलो॥ ॥ रे॥ अहोकलिंगाभा
 गीघोरअवश्य॥ ॥ धनगोपीचन्द्रगजापरि
 क्षेपनचो॥ ॥ गो॥ अहोप्रियउदनापडमास
 घनेविश्रामकरिबो॥ ॥ उप॥ अहोमहागज
 जेआज्ञा॥ ॥ लु॥ ॥ धनवंगकुमारया
 पदेश॥ ॥ मे॥ एग॥ गुंजीलि॥ अस्ताए॥ रिपुकु
 रगजमथसमशिलासेमगपतिविक्रमकिरति
 उलासे॥ आइलोहेवंगकुमारजगतवरवानेसदन
 सदृशरूपविदितभुवने॥ ॥ वं॥ अहोभाइअंग
 कुमारकलावतीमन्त्रीकोतवारखनेकविश्रामकरि
 बो॥ ॥ अहोमहागजवंगकुमारअवश्य॥ ॥
 वं॥ अहोभाइअंगकुमारकलावतमन्त्रीकोतवालअ
 मारमहिमासुनो॥ ॥ सर्व॥ अहोमहागजजेआ
 ज्ञाकरो॥ ॥ वं॥ यस्यक्रोधेनशत्रूणां ध्वस्तदप्य

पुजायते ॥ नाम्ना वंगकुमारो हं भुवि विष्णोः तविक्रम
 ॥ ॥ सर्व ॥ अहो महा राज वंगकुमार सत्य ॥ ॥
 अं ॥ अहो महा राज वंगकुमार अमार विनति सुनो ॥
 ॥ ॥ वं ॥ अहो भाइ अंगकुमार कहो ॥ ॥ अं ॥
 श्रो ॥ निर्जित शत्रु से न्यायं प्रसिद्ध गुण वाच्य ॥ श्री
 मा वंगकुमारो हं नाम्ना वंगेश्वर उजः ॥ ॥ वं ॥
 अहो भाइ अंगकुमार सत्य ॥ ॥ क ॥ अहो महा राज
 अमार विनति सुनो ॥ ॥ वं ॥ अहो कलावति
 कहो ॥ ॥ क ॥ श्रो ॥ सुन्दरी चंचला पांगी प्रसू
 र कमलानना ॥ कलावतीति विख्याता नाम्ना वंगेश्व
 र प्रिया ॥ ॥ वं ॥ अहो प्रिय कलावती सत्य ॥
 ॥ ॥ ली ॥ अहो प्रभु अंगकुमार अमार विनति सु
 नो ॥ ॥ अं ॥ अहो प्रिय लीलावति कहो ॥ ॥
 ली ॥ श्रो ॥ रवजरी देखाणा चन्द्रमुखी मंजुर हसिनी ॥
 लीलावती गुणवती विवेशन टमन्दिरम् ॥ ॥ अं ॥
 अहो प्रिय सत्य ॥ ॥ आ ॥ अहो महा राज वंगकु
 मार अमार विनति सुनो ॥ ॥ वं ॥ अहो आनन्द म
 हथा कहो ॥ ॥ आ ॥ आनन्द महथा अमी मं च
 सादार ॥ संगम जितिया भूमि भोग अपान ॥ ॥
 वं ॥ अहो महा तन्द महथा सत्य ॥ ॥ नि ॥ अहो मु
 हा राज वंगकुमार अमार विनति सुनो ॥ ॥ वं ॥ अहो

निगनन्दधारिकहो॥ ॥नि॥असिनिर्गतिआछे
नुमारेसेवकनिगनन्दधारिनामनृपतिभेदक॥ ॥
वं॥अहोनिगनन्दधारिसत्य॥ ॥वं॥अहोनिग
नन्दधारिसकलसैन्यसामंतएकत्रकरिगशीघ्र
आनव॥ ॥नि॥अहोमहाराजजेआजा॥ ॥
कोणावडावनायसरतु॥अहोवाघकरलोकयथा
आइसो॥ ॥नायवंवदोर॥ ॥नि॥अहोवा
घकरलोकमहाराजवंगकुमारेआजासकलसे
न्यसामंतशीघ्रबोलाइयाआनो॥ ॥नायजेनो
हारदोर॥ ॥सैन्यद्व॥तिप॥ ॥पर्जन
आनियाक॥ ॥वं॥अहोभाइअंगकुमारआ
नन्दमहथा निगनन्दधारिसैन्यलोकअमारवैश
गोपीचन्दआछेतारदेशजितितेजायवोचलो॥
॥ ॥सर्व॥अहोमहाराजजेआजा॥ ॥वंमे॥ग
गबलालि॥प॥जाइवोआनन्दमहथानिगनन्दकुवा
रेमुखमरितेजायवोबंगेलोकमार॥रुतियापति
यादेशआनिबोधरियाजितिवोसकलसैन्यआनन्द
करिया॥ ॥खबया॥सर्व॥अहोमहाराजशीघ्र
चलो॥ ॥वं॥अहोभाइमंत्रीकोतवालअव
स्य॥ ॥राशिपनिवं॥भासा॥ ॥क॥अ

गोपीचंद्रराजाको

होलीलावतिमहाएजेरेसंगामेवार्तासुनितेजा
 यवोचलो॥ ॥ली॥अहोलीलावतीअवस्य॥
 ॥ ॥वैमे॥एग॥मारुवा॥लं॥गमनकरिलोप
 तिविषमसमरेचरहआपनघरचरणोभरे॥
 मानसहरषधीवसेअंतपूरेपतिरुविजयसुनि
 अतितनसुने॥ ॥खवया॥ली॥अहोकलाव
 तीशीघुचलो॥ ॥क॥अहोलीलावतिअव
 स्य॥ ॥लु५॥ ॥थनअहिनायकपनिव
 व॥मे॥ ॥एग॥धनाश्री॥प्र॥आइलोअ
 हिनायकएजालोग्यवारनहिनायकमहिनाय
 कसाजारडधदहिरतिघोरखायिमनमानेखिया
 रकरियारहिवथानेलोथाने॥ ॥साजयावड
 डल्लाकमानकरव्यालयाक॥ ॥थनवंगक
 मारहथाखव॥शक॥भासाउं॥ ॥थनयुद्धमे
 ॥एग॥पहडिया॥प्र॥कथाजाइवेडखवंगेरकुमा
 रमारियापथाइतुमिजमेलोडवार॥ ॥व॥
 अहोपापिष्टअहिनायकमहिनायकआजुक
 थाजाईवोअमारवचनसुने॥ ॥वंगया॥
 मे॥इष्टअहिनायकनहिमहिबीरेमारियाका
 टियादिवोनमारिशरीरे॥ ॥भनसकल्यं॥

गोपीचन्द्रराजाको

हा लावविसेवं॥दोर॥ ॥चं॥अहोआनन्दमह
 थानिगानन्दद्वारिस्थायवनेकविश्रामकरि
 याथाकिबो॥ ॥सर्व॥अहोमहाएजवंगकुमा
 रअवश्य॥ ॥वं॥अहोआनन्दमहथानिगान
 न्दद्वारिअंतपूरजायवोचलो॥ ॥सर्व॥अ
 होवंगकुमारअवश्य॥ ॥वंमे॥राग॥केदार
 ॥चो॥तवरक्षसेन्यआवेकरियाविनाशासतो
 राजायवोचरोअपनारवास॥विधिदिलोमोरज
 सजितिगोपिचन्दसभसुखएजकरोमनेलोआ
 नन्द॥ ॥खवया॥सर्व॥अहोमहाएजशीघ्र
 चलो॥ ॥वं॥अहोसैन्यलोकअवश्य॥ ॥लु६
 ॥ ॥इतिनिष्क्रांतासर्वप्रथमांक॥ ॥मंगला
 चरणमे॥ ॥राग॥प्रथमंजलि॥प्र॥जयनटेश
 शरीरसंगितिपिरितिकारिणिहूप्रणिनिभक्तजनमत
 मोहभगितिपापखंडितिहे॥मन्त्रम॥पतिजातधा
 रिति सर्वविषधारत्तहालिति सकलसुखमतआस
 कारिणिशत्रुदशिनिहे॥विविधसुरतरचित्रमोहिनि
 सप्तसूरजुतनालसोहिनिगीतएगसुभागभागिनिदे
 वियोगितिहे॥नृपतिचक्रसजितमलभास्करभू
 षणजितडःखसंकतहरनाशिनिमण्डलासिति

ह॥ ॥थन गोपीचन्द्र अलंकार गोवत॥ भा
साउं॥ ॥खेनु कलिंगाभागीयोरुवव॥ मे
॥गगकोशिक॥ प्र॥नगरचीरुअमिदेखिलो
विल्लरे बुह्मणमगलपधेअजयनगरे॥दिज
आदिचारवर्णानिति पठेचरे निगमपुण्णसुति
धर्मकोभो॥ ॥खे॥अहो कलिंगाभागीयोर
महागजार आजाने देशचच्चादेधिया आशिणे सेव
नावागजार आगे कहिते जाडूवोचलो॥ ॥कभा
॥अहो महापात्र अवस्य चलो॥ ॥खे॥अहो
कलिंगाभागीयोर अवस्य॥ ॥सोहस्येन॥
अहो महागज गोपीचन्द्र अमार पणाम्॥ ॥
गो॥अहो महापात्र कलिंगाभागीयोर देशचच्चा
देखिया आसिलो सेवना न्न कहो॥ ॥खे॥अ
हो महागज अप नार पना पे मकल लोक सुखी आ
हे॥ ॥गो॥अहो महापात्र एणा आइ सो॥
खे॥अहो महागज अवस्य॥ ॥थन अहिनाय
क पनिडुःख नं वव॥ दोर॥ ॥गजा सेवा धाव
॥ ॥गो॥अहो अहिर लोक एथा आई सो॥
अहिर नं वना न्न खकड॥ ॥गो॥अहो अहि
र लोक मत्प॥ ॥गोपीचन्द्र नहथार मुन

गोपीचन्द्रराजाको

केयातहाक॥ अहोभागीघोरवगकुमारैअमादे
 शरुतियागेलोअमारसैन्यएकत्रकरे॥ ॥भा॥
 ॥अहोमहाराजजेआज्ञा॥ ॥भागीघोरको
 रासदनावनायसलजु॥ अहोवादेकरलोकएथा
 आइसो॥ ॥नायववदोर॥ ॥भा॥अहोवा
 घकरलोकमहाराजरआज्ञासकलसैन्यशस्त्रअ
 स्त्रसहितबोलापआनव॥ ॥नायनोहलावव
 ॥ ॥सैन्यववदोर॥राजासेवाधाव॥ ॥गो॥
 अहोसैन्यलोकयथाआइसो॥ ॥गो॥अहो
 खेतुमहापात्रकलिंगाभागीघोरइनवरक्षसैन्यले
 यावंगकुमारउपरजुद्धकरितेजाव॥ ॥खे॥
 अहोमहाराजजेआज्ञाअमारप्रणाम॥ ॥बंमे॥
 राग॥सोरथ॥चो॥चरिलोपात्रराजारैआदेशवंग
 गकुमारकेकरिवोविनाशे॥सुनिलोअमारदेशरु
 तिलोगमानेमुहखकुमारमोरवलनहिजाने॥ ॥
 कोराभासा॥खे॥अहोकलिंगाभागीघोरराजार
 आजानेइनवरक्षसैन्यलेयावंगकुमारउपरयु
 द्धकरितेजाइवोचलो॥ ॥सर्व॥अहोमहापात्र
 सर्वथा॥ ॥खवया॥सर्व॥अहोमहापात्रशी
 घुचलो॥ ॥खे॥अहोसैन्यलोकअवश्य॥

गोपीचन्द्रराजाको

॥ ॥ थनराजायादेगुलियाक ॥ भराशीलवव ॥
 छतिप ॥ आरवायानकावव ॥ तिप ॥ ॥ गो ॥
 अहोउदनापडमाखेतुसंगामपठाइयावार्त्ता
 मुनितेजाइवोचलो ॥ ॥ उप ॥ अहोमहार
 जेश्वरविजयकरो ॥ ॥ वंमे ॥ रागा ॥ केदार ॥
 गण्डल ॥ खेतुपठाइयाकार्यअवेकीकरिवोच
 लोहउदनापडमा मुनितेजायवो ॥ सतोरचरो
 हेराणि अंतपूरजाइमनेरचिंतितकथाभरमते
 पाइ ॥ ॥ कोराभासाउं ॥ ॥ खवया ॥
 उप ॥ अहोमहारजशीघ्रचलो ॥ ॥ गो ॥ अ
 होषियउदनापडमाअवश्य ॥ ॥ लु ॥ ॥
 थनकलावतिलीलावतीववहेथुमे ॥ ॥ रागा ॥
 मारवा ॥ लं ॥ गमनकरिलोपति ॥ कोराभासाउं
 ॥ ॥ क ॥ अहोलीलावतीखनेकविश्रामकर
 रिवो ॥ ॥ ली ॥ अहोकलावतीअवश्य ॥ ॥
 वंगकुमारवव ॥ तिप ॥ कोराभासाउं ॥ ॥ वं ॥
 अहोषियअवश्य ॥ ॥ थनखेतुहथारवव
 ॥ राक ॥ ॥ खेतुनहतकु ॥ रेरेइष्टवंगकुमा
 र आजुकथाजाइवो अमारवचनसुनो ॥ ॥

वं॥ अरे पापिष्ट खेतकरो॥ ॥ युद्धमे॥ एग॥ ध
नाश्री॥ प्र॥ समरे कातिया माथा आजु दधायि वो अ
वस्य जमे लो घर मारि पठाइ वो॥ ॥ खे॥ अहो
वृ वंग कुमार सावधान करो॥ ॥ वं॥ अरे इष्ट खे
तु सावधान करि लाति छ॥ ॥ मे॥ इष्ट खेतु
मियुद्ध करि तेना पाले मारिया पठाइ वो तु मिज मेरो
डवारे॥ ॥ वंग कुमार नखेतु थवथा लवोड॥
अहो खेतु महा पात्र यथा आगमन करो॥ खे॥ अ
हो वंग कुमार आजा करो॥ ॥ वं॥ अहो खेतु म
हा पात्र तु मिअमार संगे युद्ध ना करिया तु मिअमार
मित्र हेलो येड मुक्ता मालाले व॥ ॥ खे॥ अहो
वंग कुमार तु मिअमाके मित्र कैलो अमित्र रि तपला
यि पाजाइ वो॥ ॥ वं॥ अहो मित्र खेतु सर्वथा॥
॥ ॥ खेतु भति ल्वाडा ववि सेवन॥ ॥ कलिं
गा॥ अहो भागी खोर इष्ट खेतु वंग कुमार मित्र करिया
गे लो अमार की करि वो सेवनांत राजा गोपी चन्देरा आ
जा कहि ते जाय वो चरो॥ ॥ भा॥ अहो कलिं गा
सर्वथा॥ वदोर॥ ॥ वंग कुमार लसन वं॥ अहो
आनन्द महथा निरानन्द धारि गोपी चन्देरा नवर
क्ष सैत्य युद्ध करिया जिति रो परम सुखे सुरा पुरजा

यवोचलो॥ ॥सर्व॥ अहो वंगकुमारविजय
करो॥ ॥वंमे॥ एग॥ गुंजलि॥ ख॥ परमहंस
या गेलो वंगकुमारे आनन्द करियामन जायवो सुर
पुरे॥ नवरक्ष न्यै न्य अमि पणियो वाने वंगदेशे न
हिविर अमार समाने॥ ॥कोण भासाउं॥ ॥
खवया॥ सर्व॥ अहो वंगकुमारशी धुविजय क
रो॥ ॥वं॥ अहो सैन्य लोक अवस्था॥ ॥लु॥
॥ ॥थन मय नावतिया प्रवेश॥ मे॥ एग॥ ए
जविजय॥ चो॥ कनक चम्पक देहे के टकी लो जा
ति ता देषिया आइलो माय मय नावति॥ परम पवि
त्र मति जगत वशति निसिदिन सेवित शिव पद गति
॥ भुवन लक्ष्मी देवी तनय वज्राने नरपति भास्कर व
खाने॥ ॥स॥ अहो योग मति भोग मति ए घने
विश्राम करिवो॥ ॥यो.भो॥ अहो मय नावति जे
आज्ञा॥ ॥स॥ अहो योग मति भोग मति अमार
हि मासु तो॥ ॥यो.भो॥ अहो महाराणि मय ना
वति आज्ञा करो॥ ॥स॥ श्लो॥ ज्ञान प्रद यो हित
सर्व मोहा पतिवृता धर्म पवित्र देहा॥ नाम्ना प्रसिद्धा
मय नावती या समागता हं भुवि कीर्तिनीया॥ ॥
यो.भो॥ अहो महाराणि मय नावति अमार विनति सु

नो॥ ॥म॥अहोयोगवतिकहो॥ ॥यो॥श्लो
॥सर्वांगमुन्दरीरस्यापण्डितप्रियवादिनी॥सत्यवता
भविष्याता॥नाम्नायोगमतीतिया॥ ॥म॥अहोस
खीयोगमतीसत्य॥ ॥भो॥अहोमहाएणिमयता
वतीअमारिवनतिसुनो॥ ॥म॥अहोसखिभोगम
तीकहो॥ ॥भो॥श्लो॥लसगणगणारस्यालो
कमानसर्जनि॥सर्वसौभाग्यनिरयात्राम्नाभोगमत
हिता॥ ॥म॥अहोसखीयोगमतिभोगमतिस्थाय
थाकियाकार्यनाहिपुत्रमुखदेखितेजाइ॥वोचलो
॥ ॥यो॥भो॥अहोमहाएणिमयनावतिअवस्यच
रो॥ ॥वमे॥एगनाट॥चरिलोमुन्दरीगोपिचन्दे
माय॥कहिलोहितवचनपत्रेलोथाय॥जाहालोशरी
रअधिकमुन्दरे॥करिलोजतनअमिसुखवन्दरे॥ ॥
कोणाभासाउं॥ ॥खवया॥यो॥भो॥अहोमहाएणि
शीघ्रचरो॥ ॥म॥अहोसखीअवश्य॥ ॥लु॥
थनगोपीचन्दएजावव॥हेथुमे॥ ॥एगकेदार॥
गणल॥खेतुपथाइया॥ ॥भासाउं॥खेतुववति
प॥कोणाभासाउं॥ ॥खे॥अहोमहाएजगोपीचन्द
अमारप्रणाम॥ ॥गो॥अहोखेतुमहापात्रस्थआ
इसो॥ ॥खे॥अहोमहाएजेश्वरसंगामवार्ताअ
वधानकरो॥ ॥गो॥अहोखेतुपात्रकहो॥ ॥
कडामे॥एगभथारि॥परिमान॥प्रथमजुहितोअमि

पायकपरिवारे उवजे पडिलो फटकारे राजा हे ॥ निनजे प
 डिलो सेजे घोडा रोडतारे हल्लि रोवत हिड वारे राजा हे
 ॥ ॥ रे ॥ अहो महा ए जेश्वर संगामे रवात्री अमि
 की वहि वो अपनार नवरक्षसै न्यजने क समस्त विनाश
 हे लो अधिक वर देषिया अमिना पालिलो ॥ ॥ गो ॥
 अहो खेतु पात्र जय पर जय देवाधिन की करि वो ॥ ॥
 थन कलिंगा भागी खोर सै न्यपनि वव ॥ दोर ॥ कुरा भा
 साउं ॥ ॥ क. भा ॥ अहो महा ए जेश्वर नुमारे चरणो न
 मस्कार ॥ ॥ गो ॥ अहो कलिंगा कोटवार सकल सै
 न्यलोक रथा आइ सो ॥ ॥ सर्व ॥ अहो महा ए जेश्व
 र अवस्य ॥ ॥ क ॥ अहो महा ए जेश्वर यथा आइ सो
 ॥ ॥ गो ॥ अहो कलिंगा अवस्य ॥ ॥ क ॥ अहो
 महा ए जनुमार मंत्री खेतु पात्र मुखे सेनापति दुष्ट मन
 हेया संगाम आगे परायिया आशिरो से पापिष्ट स्वामि
 दोहि नुमार सेवक नाहय ॥ ॥ गो ॥ अहो कलिंगा
 सत्य ॥ ॥ गो ॥ अहो कलिंगा नुमिड वार मध्ये था कि
 ते जाव अमि पान दिया खेतु पठाई वो नुमि पान देषिया
 जोगप सास्तिकरो ॥ ॥ क. भा ॥ अहो महा ए ज अव
 स्य ॥ ॥ थन निहंड वार सचो नवन ॥ ॥ गो ॥
 अहो खेतु पात्र नुमिड प्रशाद पान लेमा जाव ॥ ॥ रे ॥
 अहो महा ए ज अवस्य अमार पणाम ॥ ॥ खेतु वंति
 प ॥ ॥ क ॥ अहो खेतु पात्र की वस्तु दिया राजा पछ

इलो देखि ॥ ॥ रे ॥ अहो कलिंगा कोत वारि देयो ॥
 कदश पान दिवेरा ज्य मारि वारे पंच पान दिवे प्रशाद ति
 न पान दिवेरा जार आजा ग दन मारि वारे ॥ अहो पापिष्ट
 वेतु यथा आइ सो ॥ ॥ रे ॥ सुखा य य न ॥ हा क ॥
 गो ॥ अहो प्रिय उद ना पड मा पापिष्ट वेतु उ स म न हे
 या अमार न वर क्ष सै न्य विना श कै लो एहि कारो रे
 तु मारि ने पठा इलो ए व ने अंत पूजा इ वो च रे ॥ ॥
 उप ॥ अहो महाराज जे आजा ॥ ॥ वं मे ॥ रा ग वि भा
 स ॥ चो ॥ सकल सै न्य मोर वेतु ना श क थिलो तार नि मि
 ने अ मि वेतु के मारि लो ॥ भा से र भिलो अ मि वेतु भो रे
 हे तो र जा निलो वेतु द गा दि वे मो रे ॥ ॥ र व व कु न न
 र नि प नि वा व ॥ उ प ॥ अहो महाराजेश्वर आप ने प
 श्वा त् ग म न क रे तु मार चरणे न म स्कार अ मी शी घु जा
 इ वो ॥ ॥ गो ॥ अहो उद ना पड मा जे इ क्षा ॥ वं ॥ ॥
 गो ॥ अत र्प्य अ मी अंत पूजा इ वो ॥ ॥ लु ४ ॥ ॥
 थ न दि ग योगी प नि स प्र वे स ॥ मे ॥ ॥ रा ग प ह लि
 या ॥ रे ॥ पुरु व दि गे लो योगि मा था न हि मु दे द क्षि रा
 दि गे लो योगि का मि नि लो को ल ॥ पश्चि म दि गे लो योगि
 सो पि ति डा जा य योग जु ग ति ने जा ने योगि ति ति आ ये ॥
 ॥ ॥ पूर्व ॥ आ हा द क्षि रा योगी पश्चि म योगी रे
 ने क य था य था कि वो ॥ ॥ द प ॥ आ हा पूर्व योगि
 अव स था कि वो ॥ ॥ पू ॥ आ हा द क्षि रा योगि पश्चि

मयोगि अमारमर्जादासुनो॥ ॥दप॥ आहा पूर्वयोगी
 कहो॥ ॥पू॥ पुरुवे योगी अमि सु दायिय माथा
 भागत माकु खायि लहिय था तथा॥ आहा दक्षिण योगी
 पश्चिम योगी एहि सो भाव अमि योगि आछे॥ ॥
 दप॥ आहा पूर्वयोगी सत्य॥ ॥द॥ आहा पूर्वयो
 गी अमारमर्जादासुनो॥ ॥आहा दक्षिण योगी क
 हो॥ ॥द॥ दक्षिण योगी अमि योगि नीर संगे भो
 ग करि यारहि मदन रंगे॥ अहो पूर्व योगी समन सुखी घ
 रवारि योगि अमि आछे॥ ॥पू॥ आहा दक्षिण योगी स
 त्य॥ ॥प॥ आहा पूर्वयोगि अमारमर्जादासुनो॥
 पू॥ आहा पश्चिम योगि कहो॥ ॥प॥ पश्चिमे योगी
 अमी मद विष खाई गजा धनुला पोस अफी मवधा
 ई॥ आहा पूर्व योगी समन अमरि योगि अमि आछे॥ ॥
 पू॥ आहा पश्चिम योगी सत्य॥ ॥पू॥ आहा दक्षिण
 योगी पश्चिम योगी यथा यथा कार्य किया नहि आछे
 यथा गुरु जालंधर योगी था के तथा दर्शन करि ते जायवो
 चरो॥ ॥दप॥ आहा पूर्वयोगी सर्वथा॥ ॥सो
 संजार्ध्या के वं मे॥ ॥राग॥ काफि॥ ॥५॥ काम रुहे
 ते अयिलो योगि गोतीर संतापे राजा लो कुमारि वालि दि
 या हुनि सापे॥ आनन्द कहि बोगिया मनोरथ करि अब
 उप चरण देखि गुरु जार्धरी॥ ॥कोण भासाउं॥
 एव वया॥ दप॥ आहा पूर्व योगी भार चरो॥ ॥पू॥
 आहा दक्षिण योगी पश्चिम योगी सर्वथा॥ ॥लु॥

थनखेतुस्यायहवहाक॥ क॥ अहोभागीखोरडपापिष्ट
 स्वामिडोहिखेतुमारिवारेराजारआजाहैलोतुमिचाण
 लवोलाइयाखेतुमारो॥ ॥भा॥ अहोकलिंगाको
 तवारअवस्य॥ ॥कोराबडावचाणलवोड॥
 ओचाणडलयथाआइसो॥ ॥चाणलववदो
 र॥ ॥थनखेतुनंकलिंगायाकेविनतियाक॥ ॥
 खे॥ अहोकलिंगाकोतवारअमारविनतिसुनो॥ ॥
 क॥ अहोखेतुकहो॥ ॥मे॥ राग॥ मधीनि॥ लं॥
 कोटवारतुमिअमिवहुतपिरतिदिनदशछिलमायाम
 ति॥ कोतवारतुमिअमिजाइहनमोहोराजालोआरति
 हैलोछोहो॥ ॥खे॥ अहोकोटवारतुमिअमिवद
 सिनेहछिलोएषनेसमस्तअपराधक्षमाकरियाएक
 वारअमारजीवराखो॥ ॥क॥ अहोखेतुएकवारसं
 पूर्णकरिमरिया॥ ॥थनएतिपतिवव॥ छतिप॥ ॥
 राणि॥ अहोकलिंगाकोतवारअमारवचनसुनो॥ ॥क
 ॥ अहोमहाराणिजेआजा॥ ॥विनतिमे॥ राग॥ पुथ
 मंजलि॥ ख॥ सुनो२कलिंगाअमारवचनेदिवतोकेको
 तवारअमुतरतने॥ नमो२कोटवारनमारोपराण
 कवारपराणराखोखेतुदेहोदाने॥ ॥राणि॥ अहोक
 लिंगाकोतवारखेतुपात्रमारितेनाचाहेअमिअंतपूर
 गोप्यकरियाराखिवो॥ ॥क॥ अहोमहाराणि

अमीकी कहिबो अपना जे इक्षा से करो इखेनु पात्र लेव
 ॥ ॥ एणि ॥ अहो कोतवार अवस्था ॥ ॥ एणि नखे
 नु जो डव वन ॥ छतिप ॥ ॥ भा ॥ अहो चांडाल ह
 थाय नु मा कार्य नहि आछे सथा हेते घरे जाव ॥ ॥
 चाण्डाल वंमे ॥ एण ॥ कोशिक ॥ पु ॥ जायिबो काज क
 रिया संसार निज खंधे करिया चार ॥ पामल वासल थि
 हे कंधार आपम एडल अनेक चाण्डाल ॥ ॥ कलिंगा
 वतिप ॥ ॥ क ॥ अहो भागी घोर एतिर आजाते खे
 नु अमिना मारिलो एक छाग मारिया राजा करत वस्त्र दे
 षा इने जायिबो चरो ॥ ॥ भा ॥ अहो कलिंगा कोतवा
 र सर्वथा ॥ ॥ खवया ॥ भा ॥ अहो कलिंगा कोरवार
 रो ॥ ॥ क ॥ अहो भागी घोर अवस्था ॥ ॥
 लुद्ध ॥ ॥ धन एतिप निवव ॥ छतिप ॥ एतिप निसे
 नखेनु याचि वसोक ॥ ॥ एणि ॥ अहो खेनु पात्र
 अमार वचन सुनो ॥ ॥ खे ॥ अहो महा एणि आजा
 करो ॥ ॥ एणि नहाहा परपु ॥ एतिर वचन खेनु क
 होर स एति करिल नु मार संगे अधिक पिरिति ॥ ॥ खे
 ॥ अहो महा एणि अमार दिनति अवधान करो ॥ ॥
 एणि ॥ अहो खेनु पात्र कहो ॥ ॥ खे ॥ दाहा ॥ नाक
 होर हमे अनुचित हाता शिव ॥ महा एणि नु मिमोर माता
 ॥ ॥ एणि ॥ अहो खेनु सत्य ॥ अहो खेनु पात्र अवस्था

जा आसिवे स्वनेनुमिहकाइया थाको ॥ ॥स्वे॥ अहो
 महाराजिजे आजा ॥स्वेनु सुलावतव ॥ ॥धनराजावव
 ॥हेथमे ॥ ॥राग ॥वतारि ॥चो ॥सकलसेन्य मोर
 ॥ ॥राजा ॥अहो हृन्द अमि परमकुद्रह्या खेतुमा
 रितेपहाइया तारवा ज्ञा सुनितेजाईवो ॥ ॥स्वतया
 ॥अमिशीघुजाइवो ॥ ॥राजा ॥अउदना पडमा
 ॥ ॥राणि ॥अहो महाराजनुमार चरणो नमस्कार
 ॥स्था आगमनकरो ॥ ॥थनकोतवारवव ॥ति
 प ॥भासाउं ॥ ॥क.भा ॥अहो महाराजनेश्वरनुमा
 रचरणो नमस्कार अपनार आजानेस्वेनु मारिया आसि
 रे इरकवसुदेवो ॥ ॥गो ॥अहो कलिंगाभागी
 वारसत्यस्था आइसो ॥ ॥क ॥अहो महाराजजेआ
 जा ॥ ॥राणि ॥अहो महाराज अमार विनति अव
 धानकरो ॥ ॥राजा ॥अहो उदना पडमा कहो ॥
 राणि ॥अधुना नाशिन खेतु परेहि परिचारकः ॥ परश्वः
 ब्राह्मणादीनां नृपोयं नाशयिष्यति ॥ अहो महाराजनेश्वर
 निस्कारणो आपनारसेवकः खेतु पात्रमारिलो अवव
 गदेशभारनाहेवे ॥ ॥थनमय नावतिवव ॥हेथ
 मे ॥ ॥राग ॥नाच ॥प्र ॥चरिलो सुन्दरि गोपीचन्दे
 रमाय ॥ कोराभासाउं ॥ ॥मा ॥अहो पुत्रगोपी
 चन्दनुमिकी करिया थाकिलो ॥ ॥सर्व ॥अहो मा

तातुमारचरणोनमस्कार एथायविजेकणे ॥ ॥
 मा॥ अहोपुत्रगोपीचन्द्र अवश्य ॥ ॥ नउवव
 तिप ॥ ॥ नउ ॥ अहोभाइवन्द अमीगोपीचन्द
 एपुनियानापितआछे एषनेअमीएजारहारजाय
 वो ॥ ॥ खवस ॥ अमीशीघ्रजाइवो ॥ ॥ न ॥
 अहोमहाएजेश्वर अमारपुणाम ॥ इआरशिदेवो ॥ ॥
 एजानहस्कनस्वयाव रूपयिया ॥ ॥ नउयातप्र
 सादवियावछोक ॥ एसनवमे ॥ ॥ एग ॥ काफि ॥ चो ॥
 चरिलोपुनियानापितेशीरे कागेनैयाभाडागतिधारे ॥
 न ॥ अहोभाइवन्द अमिघरजाइवो ॥ ॥ खवया ॥ अ
 मीशीघ्रजाइवो ॥ ॥ म ॥ अहोपुत्रगोपीचन्द्र अमा
 रवचनसुनो ॥ ॥ अहोमाताआजाकणे ॥ ॥ म
 यनावतिउक्तमे ॥ एग ॥ विभास ॥ प्र ॥ सर्वगआपुन्य
 रूपकिपुननिहारमुख एरूपजोभननहिसारेनुमारअ
 धिकछिलो नुमारवापरूपपरियाअनरेछानखारे ॥
 म ॥ अहोपुत्रनुमारइरूपजोभनसुथिरनाहिवेक ॥ ॥
 गो ॥ अहोमाताअमारवचनअवधानकणे ॥ ॥ म ॥
 अहोपुत्रकहो ॥ ॥ गो ॥ मे ॥ हलिघोडापयोदरसे
 न्यभासारमोरउदनापडमाडइराणि होनदेखोगजाव
 गेलोउपभोगइहानेकनेकपुन्यमानि ॥ ॥ अहोमा
 ताएमनवगदेशोरगजाहैयावसजानकरिरेअमारकी
 निस्तारहैवे ॥ ॥ म ॥ अहोपुत्रसुनो ॥ ॥ गो ॥

अहोमाता कहो॥ ॥मे॥ कंसलो राजतसनदो रवातदेव
गण सारहसहस्र गोपीघरे॥ इदुजिनिया पुनाता हार एज
नछिलो हेनो एजागे लोजमघरे॥ ॥अहोपुत्र पृथि
वीमध्वे साक्षात् इदुसमानक ते कहैलो सेसमुल राजा
कथागे ल॥ ग्व॥ अहोमाता अवधानकरो॥ ॥म॥
अहोपुत्र कहो॥ ॥मे॥ मायलो वचन दंका राजा
लो एगिलो संका तुमिमाता बुद्धि कहो काजे चारु ल
मे लो भय प्राण मे शिथिर तहि के मने भांदि वो जमरा
जे॥ ॥अहोमाता नुमार आजा सुनिमा अमार वद
चास है लो छहि शरीर को न बुद्धि उपाय ते थिर है वे से उ
पाय आजा करो॥ ॥म॥ अहोपुत्र सुनो॥ ॥गो॥
अहोमाता आजा करो॥ ॥मे॥ महापात्र पथाई
या प्रम पुरुष आनो ता के मा गो जीवन उपाय प्ररूप
छादिया पुता योगी रूप धरे ने अवस्य अमर है वे का
या॥ अहोपुत्र र इउपाय करो॥ ॥गो॥ अहो
माता अमि आवे वे के काल सरूप है या खनु पात्र मा
रिलो छयने को न के पठाइते॥ ॥म॥ अहोपुत्र
खनु पात्र नामा र आछे नुमार उदना पडमा डइ ए
शि बोध करिया मा गो खेतु निश्चय आछे संका ना
करो अमि जाइवो॥ ॥गो॥ अहोमाता विजय क
रो नुमार आजा अमि अवश्य करि वो नुमार चरणोत

तीयाकः॥

॥धनमंगलाचरणामे॥

॥गग॥आलाबलि

॥चो॥मीननयनिअतिचोदमुखेइतिदेविलकलगतिशोभुपरा
णाविधिहेरिसिरीपतिशुभकारिमल्लिगति लोकसेवितशक्तिकाम
कलान॥धीरसमरकरिशुभ्रअसुरमारिजिनि - - जसरिकम्य
धरणो सरकाधसिधीरकतखपरभारि मोहजलधीतीरिमरा
हरणो॥पिरमनेरहतिपरममंगलरक्ति मंजुसरसातिगजि
नमाने भुवनलक्ष्मीदेवि भास्करपदसेविदेहुविजयमणिमि
हसुजाने॥ ॥जारंधरयाप्रवेशमे॥ ॥गग॥कोराव॥

चो॥अपकनधुरसनवुमंतिमूठालोक समुखेरीहियाआहे
इडइदकाजमजिनियावावाअमारगमने नाहिलोचोदेसूर्य
हृदिपादंकामारियादेहोवाचजनवैरि होऐआयसोगुरुजारं
धरि॥ ॥गजायातआसिर्वाद॥आहाभाइवन्दसुनो॥

अनाथनाथबन्धुअसारसारसारसिन्धु अचरभारभारिविन्दु
अमृतधारधारइन्दु धारणीधारणीगगनगामिनी दिगन्त
वारिणी अद्रिदायनी बुद्धिदायिनी त्रासखेडिनि नवकोटि
चामुण्डा दशकोटिवेत्तारडाकिनी योगिनी आकाशचारि
णी नागनागिनी चक्षयक्षणी अद्रिभैरव सिद्धिभैरव महा
कालभैरव ज्ञानभैरवी भारभैरवी सारभैरवी खचाभूचर
डामरकेनर इन्दुयमवरुणाकुबेर अर्धदुर्ध्व वल्गविष्णु सर
कलईश्वरदेवदेव श्रीमहादेवघर्घरीवाजोतन्त्रीताणै आ
नन्दपूरी सकालवृषिमेघवीरिसो धारणीमाता अन्नपूरी गा
ईमहीषपूरीडुहो भाइवन्धुमित्रकलत्रसंगसाथअभेदकर
राजाण्यकरी प्रजासुखीहो राजाधिराज सकलगजचक्रा
धीश्वर श्रीश्रीजयभास्करमहदेवमहस्रवर्षजीवो अख
गडप्रतापभो विषक्षपक्षनाशकरी श्रीगुरुश्वरक्षनाथर

शाकरो॥ ॥आहाजनवन्द सथायवनेकथाकिबो॥ ॥
 आहाजनवन्दसुनो॥ ॥श्लोक॥अन्तर्निश्चलितात्मशीप
 कलिकास्वाधारवंधादिभिर्ध्यायोगीयुगकल्पकादिरचना
 तत्त्वचयोगीयते॥ज्ञानात्मोहमहोदधेसमभवद्याद्यादिमा
 नस्त्वयं व्यक्ताव्यक्तगुणाधिकत्वमणिशंभ्रीमीननाथभजे॥ ॥
 आहावावाभमीजार्धरयोगीआहे गुरुपसादेशकलयोगेरात
 त्वज्ञानभमीजानि एवनेयथापछाणविछाड्याथाकिबो॥ ॥
 धनदिगयोगीवव॥हेधुमे॥भासाउं॥रागपथमंजलि॥चो॥
 कामरुहेते॥ ॥दिगयोगी॥आहागुरुजार्धरिआदेश॥
 जा॥आहापूर्वयोगीदक्षिणयोगीपश्चिमयोगीतुमिसकले
 आपनारुदिगेगियाथाको॥अमिआपनारदिगगियाथाकि
 बो॥ ॥पूदप॥आहागुरुजार्धरियासर्वथा॥ ॥
 धवथवदिगसचो॥ ॥जा॥आहापूर्वयोगीतुमिआपना
 रपूर्वदिगेअपूर्वाइकहो॥ ॥पू॥आहागुरुजार्धरी-पूर्वदि
 गेअपूर्वायिसमस्तआपनेजातिरेन्तथापिअमिकिंचित्कहि
 बोसुनो॥पुथमपूर्वदिगमध्ये वडियातक्षत्रसाक्षान्त्वर्गपू
 समानतारमध्येगंगासागरथाकरुद्वारजगन्नाथरायकोना
 केतीर्थकोनाकेसूर्यकटकवागणसिद्धत्रतथाभुवनेश्वरीदे
 वीघोछादेशमध्येसाक्षिगोपालजारिवण्डमध्येरुकिनीदेवी
 हाजिपूरमध्येवेतरागिनदीविराजामवानीमंगलकोटमध्ये
 मंगलादेवीत्रिपुरादेवीआरवदक्षत्रकामरुदेशकामा
 क्षादेवीनिशाचरपर्वतकुम्भपुत्रतदीवानेश्वरलिंगकमला
 वतिदेशमध्येजलेश्वरलिंगसिद्धेश्वरीदेवीबोदागदमध्ये
 कारतोयानदीकालिकादेवीतारनिकटेदामोदरकुण्डतार
 निकटेमहेश्वरपूरनामनगरगोरक्षनाथगोरक्षपाडुका

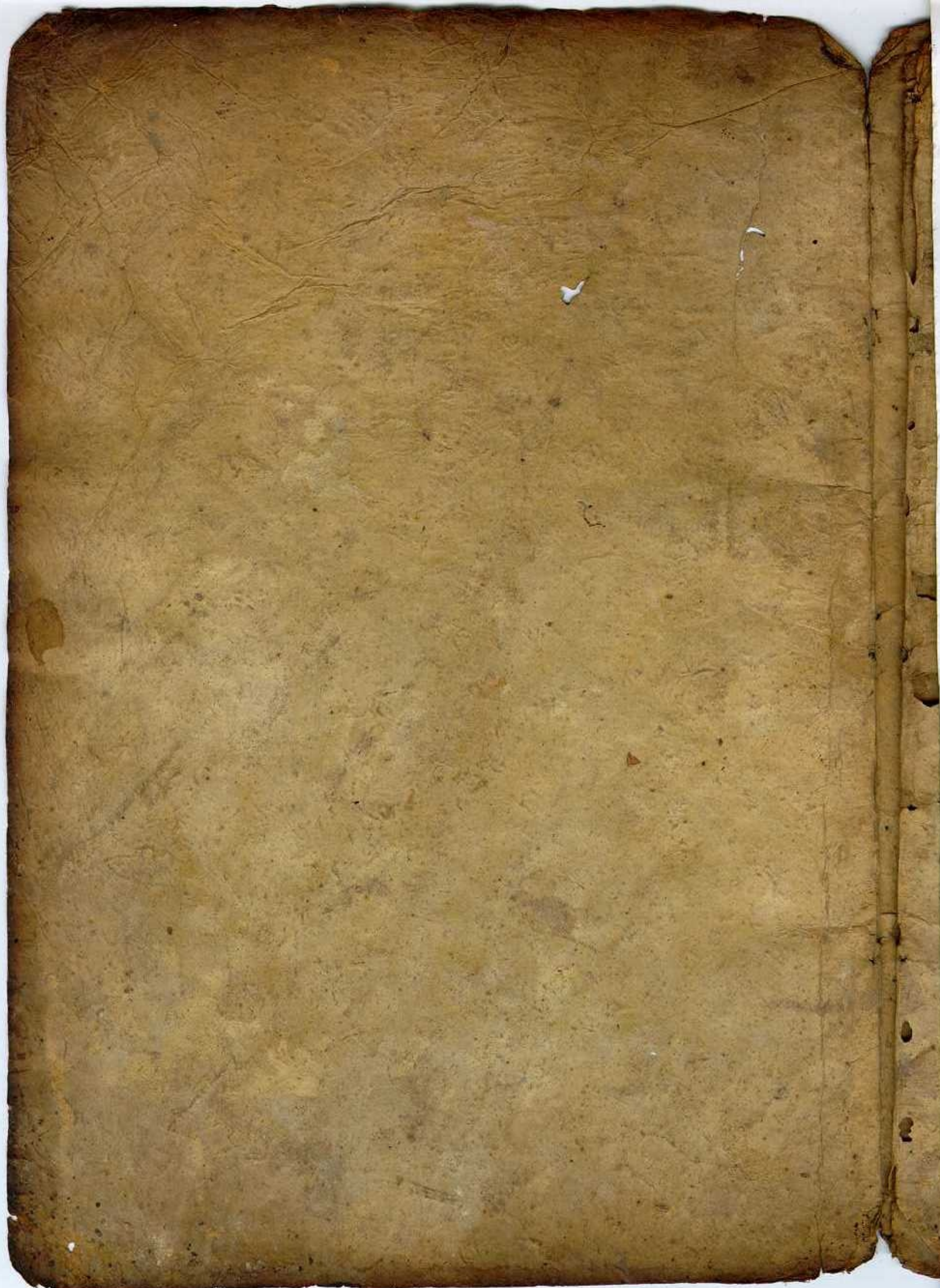
॥ वे॥ अहो गुरु ॥ गो॥ चन्द्रय ॥ आके तथा ज
 गोचरो ॥ ॥ जा॥ अ॥ बावाचरो ॥ ॥ खवया ॥ म
 आहावावाभा ॥ चरो ॥ ॥ वे॥ अहो गुरु अवस्प ॥
 लु२ ॥ ॥ धनदिगयोगी परिशेषवत् ॥ ॥ पू॥ आ
 दक्षिणयोगी पश्चिमयोगी गुरु जारंधरी पा गोपी चन्द्रदाकिरे
 मश्रुगितजाइया अवस्पदाकिरे श्रुगा लुजितजायवाचरो ॥
 द॥ ॥ आहा पूर्वयोगी सर्वथा चरो ॥ ॥ द॥ मे ॥ एगकी राव ॥
 ॥ कारगिगोदुरियमदमागय हमभरिदेहामदक ॥ एगुमि
 भरिदेहामदकेरोपानि ॥ कोराभासाउं ॥ ॥ खवया ॥ द॥ य
 ॥ आहा पूर्वयोगी भा ॥ चरो ॥ ॥ पू॥ आहा दक्षिणयोगी
 पश्चिमयोगी सर्वथा ॥ ॥ लु३ ॥ धनराजापनिवत् ॥ हेथ
 मे ॥ ॥ एग ॥ वरारि ॥ ए ॥ योगीखोजिते ॥ कोराभासाउं ॥
 गो ॥ अहो उदनापडुमास घने सथायविश्रामकरिवो ॥
 द॥ ॥ अहो महाराज अवस्प ॥ खेतनजारन्ध्रावोडाववव ॥
 य ॥ कोराभासाउं ॥ ॥ वे॥ अहो गुरु जारंधरी पा पद्या
 खनेक छाराविह्यायि मथाको अमिराजासनेगिया जरा ॥
 द॥ ॥ आहावावुजाव ॥ ॥ वे॥ अहो महाराजेश्वरानुमारच
 ने नमस्कार ॥ ॥ गो ॥ अहो खेतुपात्र सथा आइयो ॥
 वे ॥ अहो महाराजेश्वर अमारवचन अवधानकरो ॥ ॥ अ
 च॥ कहा ॥ ॥ मे ॥ एगपहरिया ॥ ख ॥ पूरुवदिगअ
 मिचाहितोगजाहे चारिगेगंगेकरे योगीआपवाचवोसि
 याआतागमाया नहिमुदेराजाहे ॥ निवरोपानगुजारा
 तपातियाकाजलाहन्दा उइचक्षुतारो रोहितवदने खाइया
 इन्दासगुन्दाराजाहे ॥ ॥ भासा ॥ वे ॥ अहो महाराजा पू
 दिगेरयोगीपथानहिमुदे ज्ञानध्यानयोगतत्त्व किमुनहे

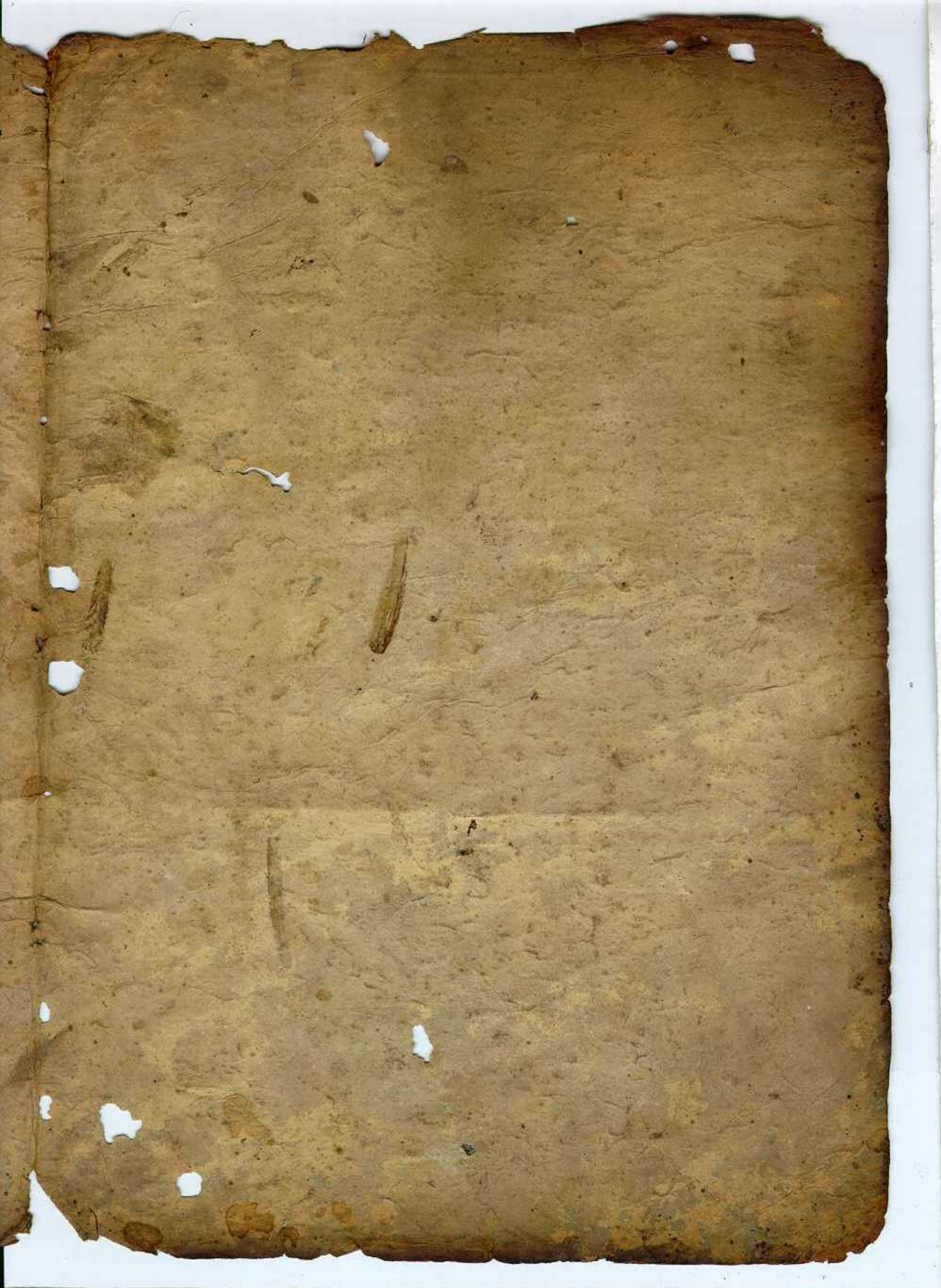
जाने रोगिहे याथाकिरो लहिसिद्धता जाहे ॥ मे ॥
 पश्चिमादिगअमिचाहिरो राजाहे दादागोरो पुनहसिद्धान्त योगी
 नारपांचवैसिया आछे माउगर्भयोड पोदा न्ने राजाहे ॥ आर
 गोतिपरमअधारीभिक्षामागियारवा यदि नहे तो योगिनगर
 तीफिरे रात्रिहे याभा मरिथथा वयरा जाहे ॥ ॥ खे ॥ अहोम
 हा राजदक्षिणादिगो योगी कार्यना आछे कामिनी को रनीया
 थाकिरो ॥ ॥ मे ॥ पश्चिमदिगअमिचाहिरो राजाहे पश्चि
 मेरो पुनहसिद्धान्त योगी चारपांचवैसिया आछे पवन करिया
 आहार राजाहे ॥ आरक गोतिपरमअहारे सोधिहरिदा यो
 गिषाय अंजुरिभरिभरि सुवर्णादिया चक्षुमिरिनाहिले वय
 राजाहे ॥ ॥ खे ॥ अहोमहा राजपश्चिमदिगो योगि धनुर
 राजा इषा इहमिया थाकिरो से योगी कार्यना आछे ॥ ॥ मे
 ॥ उत्तरदिगअमिचाहिलो राजाहे उत्तरयोगी से तारि हाथे रेवा रा
 ठिकाधे मोरि कंठा होरो आयसो गुरु जार धरि राजाहे ॥ ते जो रा
 जा पानदण्डसिहासन धरि गिया जार धरि पाय सुकविहंस मो
 दिसिद्धान्त गावय तावहे वैपिण्डरो उधार राजाहे ॥ ॥ खे ॥
 अहोमहा राज उत्तरदिगो योगी अवस्पसिद्ध आछे अमिबोधक
 रिया खोजिया आनिरो ॥ अतपर योगेश्वर दर्शन करिने च ॥
 गो ॥ अहो खेतु अवस्प ॥ ॥ धनकोत वारत योगी परिक्षाया
 क ॥ ॥ को ॥ अहो गुरु आदेश ॥ योगिनं छुन मधाव ॥ ॥
 को ॥ अहो भागी यो ॥ योगिवदोग मातिया आछे अमी मारिया
 पद ॥ ॥ भा ॥ अहो कली गा कोत वार संचूर्ण करिया
 मारो ॥ कलिं गात योगी दायतन ॥ ॥ यो ॥ आहा वावु अ
 मार वचन सुनो ॥ ॥ क ॥ अहो योगी कहो ॥ ॥ मे
 ॥ रागादिभा ॥ खे ॥ मुयतो ता जानिलो तावा एरा न्ने धुंधेलो

ये योगी ॥ १२॥ गंगा का भेद ॥ के पसन्त श्री गोरक्ष देव ॥ आ हा
 वावु ॥ गंगा य न न व लु के नो देवो ना दिवो वावु ॥ ॥ क ॥ अ हो
 योगी तु मि व रो क्त प आ छे यदि व ल्क अ मि मा गिलो से व लु ना दि
 लो अ मि रा जा आ ज्ञा ते सक ल देश रात्री दिव स फि रि ते चा हे ॥
 शी त नि वार णा क रि वा रि नि मि त्रे तु मा र कं था अ मा के देव ॥ ॥
 यो ॥ आ हा वावु योगी र व लु कं ठा के ने मा गिलो ॥ ॥ क ॥ अ हो
 योगी यदि कं ठा ना दि वे वे ता र वा णि वो लो ॥ ॥ यो ॥ आ हा वा
 वु सु नो ॥ चि र कृ कं ठा मो र वि पी त भे स क र णा नि या मो र वे
 हा इ वो देश कं ठा सि या व य वि रि ष त र वे सि कं ठा सि या पु न स
 त गु रू प छि हा त के लो सु रू पा त के लो धा गा सि धि वृ द्धि वा वु कं
 ठा लि यो ना गा कं ठा सि या अ मि धा गा ला य कं ठा दि ले श्री गोरक्ष
 ला य ॥ आ हा वावु योगी र जी व स मा न कं ठा के नो देवो ना दि वो
 वावु ॥ ॥ क ॥ अ हो योगी यदि कं ठा ना दि वे अ मा रा जा
 ते न ग रं त फि रि ते चा हे त वे व रो पी श्र म हे वे से पी श्र म नि वा
 रा क रि ते र हि प त्र भे रि या ज ल पा न क रि वो तु मा र प त्र अ मा के
 देव ॥ ॥ यो ॥ आ हा वावु योगी र प त्र तु मा र का र्य ना आ छे
 ॥ ॥ क ॥ अ हो योगी यदि प त्र वा दि वे त वे ता ल वा णि वो लो
 ॥ ॥ यो ॥ आ हा वावु सु नो ॥ ना वे २ अं त फु लि लो एक गो टा
 मा र्के २ का ते का रिय डु ड गो टा न र व र्ण र सो ना र ग धिय न र व र्ण
 र कु र्मा र ग धिय र व र्ण र उ प र हा त न वा त डु ड र मा चि र क
 वा ल रा भा त ये योगी जा न य र व र्ण र का वा र ता र अ मा र र का
 का र ॥ आ हा वावु के ने योगी र प त्र दि वो ना दि वो वावु ॥ ॥
 क ॥ अ हो योगी रा जा र आ ज्ञा ते सर्वा र्ग वि भू ति रा इ या अ चि
 त ती या भे ष ध रि या प र रा ज्य च रा च रि त्र दि ख ते जा य वो तु
 मा र वि भू ति अ मा के देव ॥ ॥ यो ॥ आ हा वावु वि भू ति

तुमारकायताआछे॥ ॥क॥अहोयोगीयदिनादिवेता
 बाणिवालो॥ ॥यो॥आहावाबुसुनो॥विभूतिमाताविभूति
 पिताविभूतिश्रुष्टिस्थितिकर्ताविभूतिराजामोहनउपायविभू
 तिवारतेउचदिगधाययेयोगीजानयविभूतिकाभेवताकेय
 सन्नश्रीगोरक्षदेव॥आहावाबुयोगीरविभूतिकेनोदेवो॥नादि
 वावाबुनादेवो॥ ॥क॥अहोयोगीयदिविभूतिनादिवे
 तेवेविनाकार्यआछेराजारआज्ञातेअन्नपदार्थसकेलजोरि
 मध्येरामियादशदिनेधंधाजाइतेचाहेतुमारजोरिअमाकेदेव॥
 ॥ ॥यो॥आहावाबुयोगीरबलुजोरिसेतुमारकार्यनाआछे
 ॥ ॥क॥अहोयोगीतथापितुमारजोरिना

भगवत्सखीमाआती भारिहें लीतजन पावे गा मेरु
 मनरे भगवत्सखी साइ हे मन भुगि पावो इ
 भगवत्सखी पावो





Handwritten text in Devanagari script, possibly a title or identifier, located in the upper left quadrant of the page.

आम्र सरकोथ
2539
ASIAN ARCHIVES